ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

भीष्म साहनी के लेखन में 'माधवी'

मंजुला शर्मा
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
टी.डी.बी. कालेज
पश्चिम बंगाल

सरांश

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में स्त्री–पुरूष की असमानता विद्यमान है। सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक बदलाव, प्रजातान्त्रिक मूलयों और व्यक्ति के मानवाधिकारों की लगातार बढ़ती जनचेतना शिक्षा और प्रसार के तकनीकी दौर में भी 'नारी प्रश्न' जीवित है। सामन्ती परिवार सन्ता से प्रजातान्त्रिक राजसत्ता (आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और वैधानिक) तक में आज भी स्त्री की स्थिति, सम्मान और अधिकार क्या है? स्त्री के व्यक्ति, व्यक्तित्व और बौद्धिक विकास में पुरूष (पिता, पति, पुत्र) अक्सर खलनायक की भूमिका में ही क्यों दिखाई देते है? स्त्री की न अपनी कोई स्वतन्त्र पहचान और न कोई स्वतन्त्र निर्णय। भारतीय साहित्य ने स्त्री–विमर्श के चित्र विभिन्न आयामों के साथ पेश किये हैं।

'माधवी' दानी राजा ययाति की कन्या है। वह पितृसत्तात्मक समाज में पुरूष की सम्पत्ति है। जहाँ पिता अपने दानी होने के अहंकार को जीवित रखने के लिए पुत्री का दान करता है। मानव अपनी गुरूदक्षिणा जुटाने के उपक्रम में उसका प्रयोग करता है। और अश्वमेघी घोड़े के बदले में उसका प्रयोग करता है और अश्वमेघी घोड़े के बदले राजा उसे अपने रनिवास में रहने की जगह देते हैं यही नहीं गालव के गुरू वृद्ध विश्वामित्र भी माधवी के देह के काममुख को लूटकर कृतकृत्य होते हैं। इन सबक बीच माधवी, गालव से प्रेम कर बैठती है क्यो? भीष्म–साहनी का स्त्री विमर्श इसकी व्याख्या करता है।

मुख्य शब्दः साहित्य, नारी–प्रश्न, पितृसत्तात्मक समाज, मानवाधिकार, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

प्रगतिशील साहित्यकार भीष्म साहनी का लेखन भारतीय जनजीवन के विविध पहलुओं एवं मानवीय संवेदनाओं का चित्रण प्रस्तुत करता है। स्त्री पुरूष की विषमता प्राचीन काल से ही अपने ठोस रूप में हमारे समाज में जीवित हैं। महाभारत की कथा से प्रेरित ीाीष्म साहनी द्वारा रचित 'माधवी' नाटक का केन्द्र राजा ययाति की कन्या 'माधवी' है। 'माधवी' नाटक के रचना प्रक्रिया के सन्दर्भ में लेखक लिखते हैं ''मैंने कथानक के नाते तो 'महाभारत' में वर्णित कथा के ही प्रसंग रखे परन्तु नाटक के केन्द्र में माधवी आ गई। यह उसी की कहानी है, पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री की अवहेलना और शोषण की कहानी ।[1]''

चहकती हुई माधवी के समझने से पहले उसका दान किया जाता है। क्योंकि ''सुनों गालव, मैं तुम्हें आठ सौ अश्वमेंघी घोड़े तो नहीं दे सकता, पर मैं अपनी एकमात्र कन्या तुम्हें सौंप सकता हूँ। वह बड़ी गुणवती युवती है। उसे पाकार कोई भी राजा तुम्हें आठ सौ अश्वमेघी घोड़े दे देगा। गिरीश रस्तोगी विश्लेषण करते हैं ''प्रथम हृदय में ही सारा धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक ढाँचा, सम्बन्धहीनता, संवेदनशून्यता, पाखण्ड, पुरूष का आत्ममोह, अधिकार–वृत्ति और समाज में –पितृसत्तात्मक सामग्री सजाम

में नारी शोषण सबकुछ संकेतित हो जाता है, स्त्री का अनिश्चय के गर्त में झोंक दिया जाना स्थापित होाता है साथ ही दो विरोधी स्वर एक–साथ उभरते हैं– एक, माधवी पटरानी बनने जा रही है, दूसरा, भगवान ही उसकी रक्षा करें क्योंकि मनुष्य जगत ने तो उसकी व्यवस्था कर दी है।[3]''

स्वयं को दान दिये जानें के सन्दर्भ में माधवी का पिता के साथ वार्तालाप होता हैः–

''माधवी'ःआज माँ होती तो क्या वह भी मुझे इस तरह दान में दे देती!

ययातिः इस समय मेरा धर्म ही सर्वोपरि है, माधवी।''

गालव के साथ माधवी अश्वमेघी घोड़ों की तलाश में निकल पड़ती है क्योंकि गालव की प्रतिज्ञा अब उसकी प्रतिज्ञा बन चुकी है। माधवी की आन्तरिकता स्पष्ट होती है ''बनों, पर्वतों को तुम्हारे संग लाँघते हुए मुझे अच्छा लगेगा।[5]''

माधवी एक के बाद एक तीन राजाओं के साथ बिना प्रेम के कामरत होती है तथा उन्हें चक्रवर्ती पुत्र प्रदान करती है। राजा हर्यश्च राज–ज्योंतिषी द्वारा उसके लक्षणों की परीक्षा करवाते हैं जो परीक्षा न होकर उसके अंग–प्रसंग का रसिक वर्णन होता है। माधवी मोल–तोल विधि के इस प्रक्रिया पर प्रश्न करती है परन्तु कोई इस पर ध्यान नहीं देता। गिरीश रस्तोगी के अनुसार ''पहली बार यहाँ इस बाजारू संस्कृति में माधवी का आक्रोश व्यक्त होता है। पर किसी का ध्यान उसकी आक्रोशात्मक वृत्ति पर नहीं है, गालव का भी नहीं। सब अपने–अपने मोल–तोल सौदे में व्यक्त और आशंकित है।''[6]

तत्पश्चात् पुत्र के लिए लालायित काशी के कामुक राज दिवोदान, और भोजनगर के वृद्ध राजा उशीनर के रनिवास में रहकर माधवी गालव के लिए छः सौ अश्वमेघी घोड़े जुटाती है एवं शेष घोड़ों के लिए वह विश्वामित्र के पास पहुँचती है। कुछ इस प्रकार माधवीः सभी राजा मेरे साथ प्रसन्न थे।

विश्वामित्रः गालव से प्रेम करते हुए तुम श्मेरे साथ रहना चाहती हो?

माधवीः हाँ, महाराज! गालव से प्रेम करते हुए ही मैं तीन राजाओं के साथ रह चुकी हूँ।''[7]

माधवी के प्रेम को भूपेन्द्र कलयी इन शब्दों में व्यक्त करते हैं 'वह गालव है, महाराज! प्रेम की जिस आँच में तपकर वह निकली है, क्या उससे कठिन परीक्षा भी कुछ हो सकती है? गुरू ने शिष्य के दम्भ को तोड़ना चाहा था, पर उनके सामने जो कसौटी थी,उसने उनके गुरूत्व को छोटा कर दिया। साधना व्यक्ति को निर्मल बनाती है, उसके अन्तर को उदार और विनीत। क्या कान्हा अपने दम्भ को जीत पाए थे?[8] माधवी के प्रेम के सन्दभ्र में रोहिणी अग्रवाल का वक्तव्य है ''निस्सन्देह विभक्त होकर भी समग्र एवं अक्षुब्ध बने रहने की जटिल साधना अथाह आत्मबल से ही संचित कर पाता है व्यक्ति।''[9] भीष्म साहनी माधवी के प्रेम के संकलप को दिखा चुके हैं'' ''जहाँ तुम्हारी यात्राा समाप्त होगी, वहाँ से मेरी यात्राा आरम्भ होगी, गालव।[10]'' भविष्य की मुक्ति और गालव से प्रेम की आकांक्षा में माधवी बार–बार निचोड़ी जाती है। गिरीश रस्तोंगी के अनुसार शब्दों में ''माधवी'' में सारी धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, वैयक्तिक व्यवस्था के बीच, सम्पूर्ण अनुष्ठान के साथ माधवी नारी देह की, रूप और सौन्दर्य की उस विडंम्बना और यातना को सहती चली जाती है और पुत्र लाभ कराती, बच्चों से अलग होती, टूटती बिखरती चली जाती है क्योंकि उसे विश्वास है कि अन्त में गालव उसे मिलेगा।[11]'' गालव के लिए माधवी गुरू दक्षिणा चुकाने एवं चक्रवर्ती राजा बन जाने तक का साधन है भवदेव पाण्डेय के अनुसार पूरे नाटक में 'माघवी' का युवा नारीत्व और चिर कुँवारायन अयोध्या के राजा हर्यश्च, काशी के दिवोदास, गोधार के उशीनर द्वारा तो निचोड़ा जाता ही है, इसके अलावा गालव के विधागुरू विश्वामित्र भी 'माधवी' की देह का काम–सुख लूटकर कृतकृत्य होते हैं। 'माधवी' द्वारा यह कहा जाना, मैं क्या चाहूँगी? मेरे चाहने से क्या होता है, गालव? मैं तो तुम्हारी गुरू दक्षिणा का निमित्त मात्र हूँ।[12]''

माधवी प्रसव वेदना को कुछ इस प्रकार स्वीकार करती है ''मैंने मन में कहा, यदि गालव से मेरा पुत्र उत्पन्न हुआ होता तो क्या में इतना रोती– चिल्लाती? तब तो मैं सारी पीड़ा हँसते–हँसते वहन कर लेती। और गालव.....।[13]'' माधवी' के अपने नवजात शिशुओं को छोड़ जाने में उसके स्त्रीत्व की पीड़ा निहित है ''जो माँ अपने बच्चे को छाती से लगा पाये, वहीं स्वतन्त्र होती है। [14]'' गालव और ययाति कर्तव्य परायण है। किन्तु जिस नारी के माध्यम से दोनें के कर्तव्य पूरे होते हैं वह दुर्बल ठहरायी जाती है। भीष्म साहनी विश्लेषण करते हैंः–

यदि यह दुर्बल नारी बीच में से निकल जाये, गालव, तो क्या होगा?[15] माधवी का आक्रोश स्पष्ट होता है 'इस दुर्बल नारी का यों भी कोई अस्तित्व नहीं है, न उस लम्पट राजा के लिए, न अयोध्या नगरी के लिए, न मेरे पिता के लिए और शायद तुम्हारे लिए भी नहीं, गालव। माधवी न घर की न घाट की।'' [16]

नाटक में यह दुर्बल नारी खिलखिला उठती है ''मैं इतने चक्रवर्ती राजाओं को जन्म दे रही हूँ वे एक दूसरे से ही लड़कर कट मरेंगे। ''17 पिता ययाति अपने दानवीरता की डंका पीटना चाहते हैं–क्या अभी भी दानी राजा कर्ण से मंरी तुलना की जाती है। या राजा कर्ण को लोग भूल गये हैं?''18 स्वंयवर में तीनों राजा माधवी को लुभाने के लिए उसके बच्चे को सामने रखते हैं। गालव माधवी से अनुष्ठान करने को कहता है। वह उसके ढले हुए देह को स्वीकार करना नहीं चाहता। उसके विश्वामित्र के आश्रम में रहने के लिएउ प्रश्न करता है माधवी और गालव का संवादः

गालवः पर जो स्त्री मेरे गुरू के आश्रम में रह चुकी हो, उसे मैं अपनी पत्नी कैसे मान सकता हूँ?

माधवीः ओ गालव, गालव, तुम सीधी बात क्यों नहीं करते? दिल में तुम्हारे वासनायें कुलबुलाने लगी है, ऊपर से तुम आदर्शों और मर्यादाओं की बात करते हो।''

तुमने मेरे यौवन की आहुति देकर अपनी गुरू–दक्षिणा जुटायी है।[19]'' अंशुल त्रिपाठी के अनुसार ''जिस गालव के लिए माधवी बार–बार माँ बनी– अयोध्या, काशी और भोजनगर का राजमुख छोड़ा– उसकी गुरू–दक्षिणा के लिए बार–बार अपने मातृत्व की हत्या कर चिरकुमारी होने के लिए अनुष्ठान किया, वहीं गालव स्वयंवर के आयोजन से पहले माधवी से विमुख हो गया। वह उसे एक ढल चुकी देह लगने लगी–अधेड़ उम्र की एक अनाकर्षक महिला, जिसके पास उदासी के सिवा और कुछ भी नहीं।''[20]

माधवी गालव के समक्ष स्पष्ट करती है ''तुम भी गुरूजनों जैसे ही निकले, गालव.....।

तुम सचमुच एक दिन ऋषि गालव बनांये।''[21]

गिरीश रस्तोगी के शब्दों में ''किसी भी पुरूष को वह परीक्षार्थी नहीं बनने देती। क्यों ये सारे ढोंगी पुरूरूा–पिता ययाति, सारे विलासी राजा, विश्वामित्र–उसकी परीक्षा करेंगे? गालव को वह पहले ही समझ चुकी थी लेकिन फिर एक बार वह अपने रूपहीन शरीर के साथ उसे आजमाती है क्योंकि वह उससे प्रेम करती है ओर उसके साथ स्वतंत्र होना चाहती है''[22]

अपने अन्तिम वाक्य ''मैंने अपनी भूमिका निभा दी.....के साथ माधवी गालव को स्वतंत्र कर जाती है।

माधवी के सन्दर्भ में भवदेव पाण्डेय लिखते हैं ''माधवी' स्त्री जागरण के प्रत्यर्थामज्ञ सूत्रधार के रूप में लिखा गया नाटक है। आज के स्त्री–विमर्श युग में माधवी ने गालवों, ययातियों और विश्वामित्रों के चेहरों के मुखौटे हटा दिये हैं।''[23] भूपेन्द्र कलसी 'माधवी' की सृजनात्मकता पर विचार व्यक्त करते हैं।''भीष्म साहनी का सृजन' मानवीय संवेदानाओं के औदात्य ओर उनकी शक्ति को निर्मित करने वाले आम आदमी के संघर्ष का सृजन है। उनके अन्य नाटकों की तरह यह नाटक भी कलात्मक सृजनशीलता अन्य नाटकों की तरह यह नाटक भी कलात्मक सृजनशीलता का पर्याय है।''[24]

भीष्म साहनी रचित 'माधवी' नाटक स्त्री और आधुनिकता पर पुनर्विचार एवं बहुत कुछ कहने की शक्ति के कारण हिन्दी और रंगमंच को आगे ले जाने में समर्थ है।

निष्कर्ष

'माधवी' नाटक का केन्द्र ययाति कन्या माधवी है। लेखक ने इस नाटक में पुरूष की सत्तात्मक प्रवृत्ति का विश्लेषण किया है। राजा ययाति, कर्ण और सत्य हरिश्चन्द्र की तरह दानवीर बनना चाहते हैं और मुनिकुमार गालव माधवी के माध्यम से गुरू दक्षिणा का ऋण चुकाना चहते हैं। माधवी गालव से प्रेम करती है और तीन राजाओं के साथ बिना प्रेम के कामरत होकर उन्हें चक्रवर्ती पुत्र और गालव को अश्वमेघी घोड़े जुटाती है। वह शेष घोड़ों के लिए विश्वामित्र को भोग्या भी बनती है। परन्तु माधवी की अपनी इच्छा का क्या? वह तो निमित्त मात्र है। स्वयंवर से पहले गालव माधवीस` मिलता है तिा उससे गुरू के आश्रम में रह चुकने एवं चिर–कौयार्य पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। माधवी गालव से अपने वास्तविक स्वरूप में जुड़ना चाहती है। और वह गालव को स्वतंत्र करती है। गालव की स्वतंत्रता में ही माधवी अपने प्रेम की परिपूर्णता समझती है। भीष्म साहनी के इस नाटक में स्त्री जीवन की गहराई अपने सम्पूर्ण परिवेश के साथ अभिव्यक्ति ही नहीं होती बल्कि माधवी की पीड़ा स्त्री त्रासदी की प्रासंगिकता को उभारने में सक्षमह ै।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *'साहनी भीष्म आज के अतीत' राजकमल, नई दिल्ली, 2003 पृ0 239*
2. *साहनी भीष्म 'माधवी' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 1984 पृ0 17*
3. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह आलोचना त्रैमासिक, अंक 17, 18 वर्ष 2004, पृ0 187*
4. *साहनी भीष्म 'माधवी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1984 पृ0 11*
5. *साहनी भीष्म 'माधवी राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1984 पृ0 28*
6. *रस्तोगी गिरीश, सं नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17,18, वर्श 2004, पृ0 187*
7. *साहनी भीष्म, 'माधवी, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, पृ0 80,81*
8. *कलसी भूपेन्द्र, सं0 नामवर सिंह, आलेचना त्रैमासिक अंक 17,18 वर्ष 2004 पृ0 210*
9. *अग्रवाल रोहिणी, सं0 नामवर सिह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17,18 वर्ष 2004 पृ0 223*
10. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1984, पृ0 26*
11. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक 17, 18, वर्ष 2004 पृ0 191*
12. *पाण्डेय भवदेव, सं0 नामवर सिंह, आलोचना, त्रैमासिक, अंक 17, 18, वर्ष 2004 पृ0 199*
13. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 पृ0 57, 58*
14. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 पृ0 54*
15. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 पृ0 55*
16. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 पृ0–55, 17 वही पृ0 56, 18 वही पृ0 42*
17. *साहनी भीष्म, माधवी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1954 पृ0 93*
18. *त्रिपाठी अंशुल सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक पृ0 17,18 वर्ष 2004 पृ0 196*
19. *साहनी भीष्म, माधवी राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1984 पृ0 94*
20. *रस्तोगी गिरीश, सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक अंक 17, 18 वर्ष 2004, पृ0 191*
21. *पाण्डेय भवदेय सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक0 17, 18 वर्ष 2004 पृ0 202*
22. *कलसी भूपेन्द्र सं0 नामवर सिंह, आलोचना त्रैमासिक, अंक 17, 18, वर्ष 2004 पृ0 210*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा–समस्यायें एंव सुधार

सुधा शर्मा
पद
विभाग
विश्वविद्यालय का नाम
शहर, राज्य

वर्तमान समय में जहां भारत विश्व शक्ति बनने की ओर अग्रसर है वही देश की भीतर हमें अपनी मौलिक आवश्यकताओं से ही जूझ रहे है शिक्षा उसमे से सब से गम्भीर मुद्दा है। प्रगति की दिशा मे वही समाज अग्रसर होता है तो चुनौतियों को स्वीकार करता है। समाज मे प्रत्येक व्यक्ति का इस प्रकार बौद्विक विकास होना चाहिये कि वह समाज की समस्याओं और चुनौतियों को समझ सके जिस देश की उच्चशिक्षा का स्तर जितना उच्च होगा उसका उच्च होगा उसका विकास भी उतना उच्चस्तर का होगा।

देश की बढती जनसंख्या को देखते हुये उच्च शिक्षा ग्रहण करने वाले युवाओ की संख्या में निरन्तर वृद्वि हो रही है। लेकिन वर्तमान समय में उच्च शिक्षा प्रवेश परीक्षा से लेकर अन्तिम परीक्षा तक कामयाबी के लिये सोच विचार कम और रटन पर अधिक जोर दिया जाता है पूरी की पूरी उच्च शिक्षा दोहराहे पर टिकी हुयी है।

भारत मे अध्यापन का इतिहास बहुत आदर्श वाला रहा है। भारत में इसें सर्वोच्च स्थान दिया गया है लेकिन वर्तमान समय मे अध्यापन भी अन्य व्यवसायों की तरह हो गया है उच्च शिक्षा के स्तर को बेहतर करने के लिये स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की स्थापना के रास्ते खोले गये थे लेकिन वर्तमान में स्ववित्तपोषित महाविद्यालय ही छात्रों और शिक्षको के शोषण का केन्द्र बनते जा रहे है। अध्यापकों को वेतन नही मिलता, प्रतियोगी परीक्षाओं का भी कोई विश्वसनीय मापदण्ड नही है नियुक्तियों मे पारदर्शित नही रहीफलतः हडताली संस्कृति विकसित होती चली जा रही हे शिक्षको को पढ़ना छोड़ कर अपने हितों के लिये सड़को पर आना पड़ रहा है।वर्तमान समय मे उच्च शिक्षा प्राप्त सर्वोच्च डिग्री लेकर भी स्ववित्तपोषित कालेज में शिक्षक एक दिहाड़ी मजदूर से भी कम वेतन पा रहा है। इसका प्रमुख कारण केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालय के द्वारा उचित नीति का निर्धारण न करना है। उनके लियेसेवायोजन की स्पष्ट नियमावली नही लागू, करना न्यूनतम वेतन नीति निर्धारण न करना आदि अनेकाअनेक समस्याये है। उस पर स्ववित्तपोषी प्रबन्धकों द्वारा अनेक प्रकार के अत्याचार को सहना पड़ रहा है। यह स्वार्थगतराजनीति का हीपरिणाम है कि आज शिक्षको को आन्दोलन की नीतिअपनानीपड़ रहीहैउच्चशिक्षा की स्थितिबेहतरबनाने के लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन हुआ लेकिन उसका भी कुछ ज्यादा लाभ स्ववित्तपोषी शिक्षको के नही मिल पा रहा है।

दुर्भाग्य से देश में जो उच्च शिक्षा का स्तर है वह सही नही है इसमे समय रहते बदलाव की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 सुरेन्द्रवर्मा–भारत मे उच्चशिक्षा दशा एवं दिशा (ई पत्रिका, रचनाकार)*
2. *श्री अतुल कोठारी– उच्च शिक्षा की दशा एवं दिशा*
3. *विनय तिवारी–उच्चशिक्षा की गुणवत्ता*
4. *उच्चशिक्षा की बिखरी कड़ियां–28 जनवरी 2018 (जागरणपत्र)*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

राजनैतिक स्तर पर उच्च शिक्षा समस्यायें, चुनौतियाँ एवं सुधार

सरिता गौतम
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
सरस्वती महिला महाविद्यालय
विजय नगर, कानपुरनगर

भारत में उच्च शिक्षा के विकास के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया। इससे विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा मे महत्वपूर्ण उपलब्धियॉ हासिल हुई। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् भारतसरकार ने इस देश की शिक्षा को सुनियोजित और संगाठित करने का निष्चय किया। उसने यह कार्य विश्वविद्यालय शिक्षा से आरम्भ किया। इसका मुख्य कारण यह था कि स्वाधीनता के युग में प्रवेष करने के समय से भारतीय विश्वविद्यालय में अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही थी। परन्तु उच्चशिक्षा के स्तर में गिरावट आ गयी थी क्योकि यह शिक्षादेश की तत्कालीनआवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल रही इन कमियों का दूर करने हेतु तथा भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च शिक्षा का पुनर्गठन करने के लिये अन्त विश्वविद्यालय परिषद और केन्द्रीय शिक्षा सलाहाकर परिषद ने एक भारतीय विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग नियुक्त करने का प्रास्ताव रखा।

किन्तु आज वर्तमान में राजनैतिक स्तर पर उच्च शिक्षा में अनेक समस्यायें एवं बाधायें उत्पन्न हो गयी है। जैसे–आज देश में भाषा, क्षेत्र तथा जाति के नाम पर टकराव की प्रवृत्तियाँ पनप रही है। सांप्रदायिक शक्तियॉ सिर उठा रही है। देश के विकास में रोड़े डाल रही है।

1. भाषा सम्बधित समस्यायें–भारत जैसे देश में आज अनेकों भाषाओं का चलन है। जिससे राजनैतिक पार्टी अधिक फायदा उठा रही है। हर समाज में अपनी–अपनी भाषा को उच्च बताने की होढ़ लगी है।
2. जतिस्तर पर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्यायें उत्पन्न हो रही है। आज समाज में बढ़ता जातिवाद शिक्षा में भी देखने को मिलता है। जिसका फायदा राजनैतिक पार्टीया उठा रही है। हिन्दू, मुस्लिम के नाम पर अनेकों बार दंगे हो चुके है। जिसका असर समाज के युवा वर्ग पर सबसे अधिक पड़ता है। जिससे युवा वर्ग का महाविद्यालयों मे राजनैतिक हस्ताक्षेप अधिक दिखाई पड़ता है।

आज सरकार शिक्षा से सम्बन्धित नई–2 योजनाओं का क्रियान्वयन तो कर रही है किन्तु उनका उचित रूप से क्रियान्वयन नही हो पा रहा है। बेरोजगारी की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इसके समाधान के लिये सरकार को अनेक कदम उठाने चाहिये।

आज समाज में राजनैतिक स्तर पर शिक्षा का दबाव बहुत अधिक देखने को मिला है। शिक्षा को व्यावस्थीकरण के रूप में लेते है। शिक्षा के गुणवक्ता में सुधार तो सम्भव नही जान पड़ता है।

अलग–अलग राजनैतिक पार्टीया अपने स्तर पर शिक्षा का प्रलोभन देकर छात्रों के भविष्य से खिलवाड़ कर रही है। बेरोजगारी की समस्या इस कदर हावी होती जा रहीहै। कि छात्रों में शिक्षा के

प्रतिउदासीनता देखी जा रही है। आज जीवोपार्जन के लिये छात्रों के समाने अनेक ऐसी चुनौतियॉ आ रही है जिससे वह पूर्ण रूप सेहल नही कर पा रहे है।

जैसे–जीवोपार्जन की समस्या।

नैतिक मुल्य की समस्या।

व्यवसाये सम्बन्धित समस्या।

जिसमे सबसे अधिक राजनैतिक पार्टीयों का हस्ताक्षेप देखा जाता है। सरकार प्रलोभन के द्वारा छात्रों में उसके भविश्य से खिलवाड़ कर रही है। वर्तमान में इस समस्या को सुधार की आवश्यकता है।

सुधार

1. महाविद्यालयों में राजनैतिक हस्ताक्षेप की कमी से।
2. बेरोजगारी की समस्या का हल।
3. राजनैतिक मूल्यों को बढ़ावा देना।
4. जातिवाद एंव सम्प्रदायिकता का अन्त।
5. गैरसरकार सगठंनो को बढ़ावा देना।

उच्च शिक्षा के सुधार के लिये क्रेन्द्र सरकार को ऐसे कदम उठाने चाहिये। जिससे वर्तमान उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जा सके। वर्तमान शिक्षा–प्रणाली में समग्रता का पूर्णतया आभाव होता जा रहा है। हम शिक्षा ग्रहण कर समग्र एवं सुदृढ़ सोच का निर्माण करते है। जिससे जीवन का समग्र विकास हो।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा में समस्यायें : चुनौतियाँ एवं सुधार स्ववित्तपोषित महाविद्यालय स्तर पर

सुषमा कमल
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
राम मनोहर लोहिया पी0जी0 कालेज
इटवा, सिद्धार्थनगर

सारांश

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम अपने राष्ट्र और समाज की उन्नति से सम्बन्धित सभी लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, जिसके लिए प्रत्येक राष्ट्र को उच्च शिक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयीय स्तर पर शिक्षा की दिशा एवं दशा में शासकीय, राजनैतिक व गुणात्मक स्तर तक समस्याओं को दूर करना अति आवश्यक हो गया है। जो हमारे राष्ट्र व समाज की उन्नति से सम्बन्धित सभी मानदण्डों पर खरी उतर सकें, लेकिन आज स्ववित्तपोषित महाविद्यालयीय स्तर पर शिक्षा व्यवस्था के नाम पर शिक्षा का निजीकरण, व्यवसायीकरण हुआ है। आज स्ववित्तपोषित महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा में खूब कमाओ की मानसिकता फल–फूल रही है। जिसका घातक परिणाम शिक्षित बेरोजगारी है। जिसके अन्तर्गत तमाम उच्च शिक्षा की डिग्री प्राप्त कर बेरोजगार घूम रहे हैं। स्ववित्तपोषित महाविद्यालय स्तर पर विभिन्न कालेजों में केवल पेपर पर ही शिक्षक को नाम दिया जाता है और कम वेतन पर स्थानीय व अनुभवहीन अध्यापकों द्वारा शिक्षण कार्य चल रहा है जो कि शिक्षा की गुणवत्ता खराब कर रहा है। छात्र केवल डिग्री पा रहा है न कि अनुभवी शिक्षा।

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। तकनीकी शिक्षा संस्थायें बढ़ी हैं वहीं मानविकी विषयों या जिन्हें आर्ट्स के विषय कहा जाता है जैसे इतिहास, समाजशास्त्र, शिक्षाशास्त्र आदि विषयों में विद्यार्थियों की रुचि घटी है।

आज उच्च शिक्षा उपयोगिता की मोहताज है हम इसे पंसद करें या न करें पर यह एक कटु सत्य है, जिसके कारण न जाने कितने महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या तेजी से घटी है व वह बंद होने के कगार पर खड़े हैं और जो चल रहे हैं उनमें भी छात्रों की संख्या कम होने के कारण प्रबन्धकीय स्तर पर अनुमोदित शिक्षकों को उनकी योग्यता अनुसार वेतन न दे पाने के कारण शिक्षण कार्य तेजी से प्रभावित हुआ है। अध्यापक न होने के कारण भी प्रयोगात्मक विषयों में प्रयोग नहीं हो पाते। छात्र केवल किताबी ज्ञान से ही रट कर परीक्षाओं को देते हैं जिससे उनके गुणात्मक स्तर पर शिक्षा का स्तर गिर रहा है। स्ववित्तपोषित स्तर पर उच्च शिक्षा में अध्यापकों की सही नियमावली न होने के कारण महाविद्यालयों द्वारा शोषण कार्य किया जा रहा है जिससे उच्च शिक्षा प्राप्त अध्यापकों के मनोबल में कमी आ रही है जिसका असर आज की आने वाली पीढ़ी में साफ स्पष्ट झलक रहा है जिसके कारण भी छात्रा का मानवीय स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने में व शोध कार्यों में रुचि की कमी दिखाई दे रही है।

निष्कर्ष

हमारे देश में स्नातकों की आपूर्ति की कोई समस्या नहीं है। समस्या स्नातकों की गुणवत्ता और नौकरियों के अनुरूप कौशल के न होने की है। हमारे विश्वविद्यालय समस्या या चुनौती का हल निकालने में असफल सिद्ध हो रहे हैं। उच्च शिक्षा की बुरी स्थिति का परिचय इस बात से हो जाता है कि 5 में से 4 स्नातक रोजगार योग्य कौशल नहीं रखते हैं। स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में योग्य शिक्षक का कागज में होने व विश्वविद्यालय द्वारा सही सत्यापन न किये जाने के कारण इन कालेजों में शिक्षा के रूप में गुणवत्ताहीन डिग्री बेचने का कार्य आसानी से किया जा रहा है। परीक्षाओं के समय साल्वरों द्वारा आसानी से पेपर हल कराकर नकल सामग्री प्रदान की जाती है जिससे शिक्षा का स्तर गिरा है।

उच्च शिक्षा में चुनौतियाँ

1. स्ववित्तपोषित स्तर पर अध्यापकों की सेवानियमावली का न होना।
2. मानविकी विषयों की उपयोगिता पर ध्यान केन्द्रित न होना।
3. स्ववित्तपोषित स्तर पर शिक्षा का निजीकरण व व्यावसायीकरण का होना।

सुधार हेतु सुझाव

1. स्ववित्तपोषित स्र पर अध्यापकों की सेवा नियमावली का निर्माण।
2. मानविकी विषयों की सामग्री रुचिपूर्ण व आज की उपयोगिता को ध्यान में रखकर बनायी जाये।
3. स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में शिक्षा में सुधार हेतु शासकीय स्तर पर शिक्षा में निजीकरण व व्यासायिक स्तर पर ध्यान केन्द्रित करना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *भारत में उच्च शिक्षा की वर्तमान स्थिति व चुनौतियाँ – डॉ0 जे0डी0 सिंह।*
2. *उच्च शिक्षा में निजीकरण एक प्रमुख समस्या – डॉ0 अशोक कुमार यादव।*
3. *हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता– अखण्ड ज्योति साहित्य।*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा की दशा एवं दिशा

शबाना परवीन
व्याख्याता
समाज शास्त्र विभाग
ब्रहस्पति महिला महाविद्यालय
कानपुर

स्वतन्त्र भारत में उच्च शिक्षा का विस्तार व्यापक स्तर पर हुआ है। लेकिन क्या यह हमारे देश की उच्च शिक्षा, छात्रों को जीवन दृष्टि देने में या उनकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सफल हुयी है। यह एक बड़ा प्रश्न है। देश की उच्च शिक्षा को शिक्षा की मूलभूत संकल्पना के साथ आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार ढालना होगा शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने देश की मूल्य आधरित बने, शिक्षा स्वायत्रा होः शिक्षा की आर्थिक व्यवस्था कैसे हो इन सब चिंतनीय विषयों पर इस प्रारूप के माध्यम से सुझाव का प्रयास किया है।

विश्व स्तरीय शिक्षण संस्थानों के सर्वेक्षण में भारत के विश्वविद्यालय, विश्व के दो सौ विश्वविद्यालयों में से प्रथम बीस की सूची में भी नहीं है, अगर हम इस सवाल के कुछ प्रमुख कारणों को देखें तो स्थिति शायद समझ में आए। अगर हम भारत के चुनिन्दा आई0आई0टी0 विश्वविद्यालयों को छोड़ दें जो अपनी योग्यताओं के कारण विश्व पटल पर अपनी छाप छोड़ रहे हैं। लेंकिन सुविधाओं के अभाव में इन संस्थानों के प्रतिभाशाली छात्र अपना देश छोड़ विदेशों में नौकरी के लिए जा रहें।

अभी कुछ दिल पहले राज्य सभा में पूछे गये एक सवाल के जवाब में सरकार के पास वही पुराना जवाब था कि देशभर के केन्द्रीय विश्वविद्यालय अध्यापकों की कमी से जूझ रहे। आप केवल अंदाजा लगायें देश के 39 केन्द्रीय विश्वविद्यालयो में शिक्षकों के चालीस फीसदी पद खाली हैं तथा वहाँ शैक्षणिक गतिविधियों और उनकी गुणवत्ता की क्या स्थिति होगी यह केवल केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थिति हो। अगर इसमें राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों को भी जोड़ दिया जाए तो तस्वीर बहुत भयावह होगी। उच्च शिक्षा के गिरते स्तर को लेकर हमारे देश के राष्ट्रपति और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति प्रणव मुखर्जी भी चिंतित हैं। वास्तविक स्थिति को जानने के लिए वह स्वयं केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में भी गये वहाँ के शिक्षकों और दात्रों से मिले यह एक बढ़यां कदम है। इसी क्रम में राष्ट्रपति जी ने एक विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कहा है कि ''हमें एक ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना होगा जहां युवाओं को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शिक्षा मिले उन्होंने छात्रों में आत्म–चेतना संवेदन शीलता, मौखिक सोच विकसित करने और प्रभावशाली, संवाद, समस्या समाधान व अतवैयक्तिक संबंध की दक्षता बढ़ाने की जरूरत है''। हमें भी अपनी जिम्मेदारी नियामी होगी तभी शिक्षा की स्थिति बेहतर हो सकें।

उच्च शिक्षा किसी भी देश की शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण स्तर होता है जो विशविद्यालयों या बड़े संस्थानों में दी जाती है। उच्च शिक्षा जो राष्ट्र की आधारशिल होतीी है। उसमें गुणवत्ता और स्वायत्रंता का सवाल एक महत्वपूर्ण प्रश्न है यह दोनों उसके महत्वपूर्ण पहलू है इसके बिना अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर पाएगी। यह कहना शायद बहुत बड़ी भूल होगी और शिक्षा में विशेषकर उच्च शिक्षा में गुणवत्त स्वायत्रंता के अभाव में असम्भव भले न हो किंतु कठिन जरूर है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता इसलिए जरूरी है, कि इसके

अंतर्गत आने वाले अनुशसन सर्वाधिक कुशलता की मांग करते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक या अर्थशास्त्री या विभिन्न विषयों के विद्वान शोधार्थी इनकी गुणवता ही उन्हें सफल बनाती है और बिना गुणवत्ता पूर्ण उच्च शिक्षा के यह संभव नहीं है। वर्तमान समय में भारत में गुणवत्ता व स्वांयत्रंता उच्च शिक्षा क्षेत्र की महत्वपूर्ण चुनौतियां हैं।

भारतीय उच्च शिक्षा की वर्तमान चुनौतियाँ

आज जरूरत उच्च शिक्षा और अधिक स्वायत बनाने की है किन्तु स्वायत किसी अराजकता का रूप न धारण करे इसका भी ध्यान रखना जरूरी है, उच्च स्तर की स्थिति बेहतर बनाने के लिए आयोग ने उच्च शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए कई सराहनीय कदम भी उठाए हैं? लेकिन दूरदर्शिता के अभाव में स्थिति वैसी की वैसी है। योजना बनाना व पालन करवाना यू0जी0सी0 और सरकार का काम है परन्तु सरकार अपने दायित्व का निर्वाह करने में निरन्तर विफल रही है। डीयू जैसे प्रतिष्ठित ज्ञान केन्द्र में जहां पूरे देश की प्रतिभा आकर केन्द्रित होती है उसकी अपनी भी मौलिक समझ होती है। खास अभिरूची होती है, इन तथ्यों पर सरोकार न रखते हुये फाण्डेशन कोर्स के नाम पर उसका वक्त व स्थिति जाया कराया जा रहा है। आखिर डीयू प्रशासन की ऐसी कौन सी बाध्यता थी एक साल में ऐसा कौन सा पहाड़ टूटा जा रहा था कि बिना किसी गंभीर मान–समथंन और सार्थक बौद्धिक विमर्श के हड़बड़ी में इस अनपेक्षित एवं गैर जरूरी बदलाव से बच्चों का साक्षात्कार कराया गया? ध्यात्व है कि सारे बच्चे आगे चलकर एम0बी0ए0 करने के उद्देश्य से डीयू0 नहीं आते न ही सबाके विदेश जाकर पढ़ाई करनी होती है कि उन पर स्नातक के दौरान एक अतिरिक्त वर्ष बोझ डाला जाय। पाठ्यक्रम में परिवर्तन तब किया जाता है जब उसमें कोई गुणात्मक दिक्कत हो।

वाकई आज एक अच्छा शोध ऐसे परिवेश की मांग करता है जहाँ शिक्षकों का स्तर अनुसंधान और उन्विषण को ईमानदार सोच के साथ बढ़ावा देने वाला हो। छात्र निरंतर विषय को आगे बढ़ाने उसका विस्तार करने और ज्ञान–विज्ञान के सत्र में नये आयाम और नीति–नियंताओं की नियत साफ हो शोध के लिए जरूरी इस अन्वेषणा बुनियादी प्रवृत्ति का अभाव सा नजर आता है। भारतीय छात्र हर साल विदेशी विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए 7 अरब डालर यानि 43 हजार करोड़ रूपये खर्च करते हैं। विश्व के श्रेष्ठ उच्च शिक्षा संस्थानों में भारत ने केवल विकसित राष्ट्रों से काफी पीछे हो बल्कि कई विकासशील राष्ट्र भी इस दृष्टि से भारत से आगे हैं।

सुधार

किसी भी संस्थान की सफलता और विफलता शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम पर निर्भर करती है। हमें इन कड़ियों की भूमिका का निष्पक्ष मूल्यांकन करन होगा तभी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव आ जायेगा।

शिक्षक व शिक्षार्थी की स्वायत्रता को बहुत सम्मान देना चाहिए क्योंकि इसके बाद ही बड़ा कार्य सम्भव है। इन योजना में उन सरकारी कालेजों की अतिरिक्त धन एवं सुविधाएं दी जाय जहाँ प्रोफेसरों का मूल्यांकपन विद्यार्थियों द्वारा किया जाता है, विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को अनुदान तब ही मिलना चाहिए जब प्रोफेसरों का मूल्यांकन विद्यार्थियों द्वारा तथा किसी स्वतंत्र बाहरी संस्था द्वारा कररााया जाए।

आज जरूरत उच्च शिक्षा को और अधिक स्वायत्त बनाने की है किन्तु स्वायत्तता किसी अराजकता का रूप न धारण करे इसका भी ध्यान रखना जरूरी है। आज जरूरत ऐसी नीतियाँ बनाने एवं उन्हें लागू करने की है जिससे हमारी वर्तमान उच्च शिक्षा विश्व स्तर की एवं गुणवत्तापूर्ण हो सके। इस हेतु हमें अपने पाठ्यक्रम, पठन पाठन के तरीकों आदि में व्यापक बदलाव करना होगा। उन्हें आज की जरूरतों के अनुकूल

बनाना होगा। आज जिस प्रकार की नयी–नहीं शिक्षण प्रौद्योगिकी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आ रही है उन्हें भी अपनाना होगा साथ ही इस बात का ध्यान रखना होगा कि हमारा ज़ज़ेर शिक्षा को देश की जरूरतों के अनुरूप तथा विश्वस्तर की बनाने पर हो। क्योंकि आज दुनिया में उच्च शिक्षा जिस तीव्र गली से विकास कर रही है हमें स्वयं को भी उन मानदंडों पर खरा उतरना होगा। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे शोधों को विश्व स्तर का बनाना होगा और इस हेतु हमें उच्च शिक्षा में योग्य प्रतिभाओं को आने का अवसर सुलभ कराना होगा। आज हमारे देश के तमाम प्रतिभावान छात्र और अध्यापक उच्च शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश ही नहीं करने पाते और जो हैं भी वो दिन–प्रतिदिन विदेशों को पलायन करते जा रहे हैं। इस हेतु महत्वपूर्ण कदम यह होगा कि उच्च शिक्षा संस्थानों में पर्याप्त वृद्धि की जाय।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *www.google.com*
2. *www.timehighereducation.com*
3. *Higher Education for 21st Century: Singh J.D.*
4. *Bharatiyashiksha.com*
5. *Crisis In Higher Education : Rani Mehta*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा : समस्याएँ, चुनौतियाँ एवं सुधार

पूजा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
संत विरागी बाबा पी0जी0 कालेज
मुइया, घाटमपुर, कानपुर नगर

प्राचीन काल से ही भारत को विश्वगुरू के नाम से जाना जाता है। भारतमें प्राचीन काल से उच्च शिक्षा गुरुकुलों तथा आश्रमों में प्रदान की जाती थी। इस काल में नालन्दा, तक्षशिला, वल्लभी मिथिला, ओदन्तपुरी काँची, काशी विश्वविद्यालय आदि के नाम उल्लेखनीय है। मुस्लिम काल में उच्च शिक्षा प्रदान करने हेतु विभिन्न मदरसे स्थापित किये गये।

आज विश्व के सभी देशों में उच्च शिक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है, क्योकि श्रेष्ठ वैज्ञानिक, तकनीशियन, विधिवेता, अन्वेषक और दार्शनिक इसी शिक्षा के ढाँचे से उत्पन्न हुए हैं। किसी देश का भावी आर्थिक विकास उस देश की उच्च शिक्षा से सम्बन्धित होता है। अतः संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण शिक्षा संरचना में प्राथमिक शिक्षा यदि शिक्षा का अधार है तो उच्च शिक्षा उसका मुकुट है।

उच्च शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ

1. वर्तमान में उच्च शिक्षा का पाठयक्रम विद्यालयों के भविष्य निर्माण मे पूर्णरूपेण समक्ष नही है। जिससे विद्यार्थियों को अपने जीवन में कुंठा तथा तनावयुक्त परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।
2. वर्तमान में उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षार्थी भी रोजगार की तलाश में भटक रहे हैं।
3. शिक्षार्थियों में व्याप्त असंतोष, कुंठा, तनाव उनकी मनोदशा में विकार उत्पन्न करते हैं जो हमारे समाज तथा राष्ट्र के लिए हितकारी नही हैं।
4. गुणवत्तापरक शिक्षा के अभाव में रोजगार के अवसरों से वंचित युवावर्ग को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है।

उच्च शिक्षा में सुधार के नवीन कदमों पर विचार

1. वर्तमान समय चुनौतियों तथा प्रतिस्पर्धा का युग है आज शिक्षा में स्नातक तथा परास्नातक पाठ्यक्रम के साथ–साथ रोजगार परक पाठ्यक्रम को शामिल कराना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे उच्चशिक्षा प्राप्ति के उपरान्त सीधे रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके।
2. शिक्षार्थियों को भावी जीवन से सम्बन्धित समस्याओं के निराकरण के लिए परामर्श केन्द्रों की व्यावस्था हो जिससे वे भटकने को विवश न हों।
3. वर्तमान समय में महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की अनुपस्थिति गम्भीर समस्या के रूप में प्रकट हुयी है जिसके निराकरण हेतु शिक्षार्थियों में शिक्षा के प्रति उनकी रुचियों को जाग्रत करना तथा उनको शिक्षा के लिए प्रेरित करना अत्यन्त आवश्यक है।
4. उच्च शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो भविष्य के लिए शिक्षार्थियों को निशचिंतता प्रदान करे। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त उन्हें निराशा के अन्धकार में भटकना न पड़े।

5. उच्च शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास करके ही उन्हें योग्य व आर्दश नागरिक बना सकते हैं जो हमारे समाज तथा राष्ट्र के विकास मे अपना योगदान दे सकें।

निष्कर्ष

उच्च शिक्षा में व्याप्त समस्याएँ निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। वर्तमान समय में छात्रों की अनुपस्थिति गम्भीर विषय है। छात्रों में शिक्षा के प्रति रुचि जाग्रत करनी होगी, साथ ही पाठ्यक्रम को समयानुसार परिर्वतित करना होगा जिससे शिक्षार्थियों में उच्च शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न हो। उच्च शिक्षा में कुशल शिक्षकों के अभाव को दूर करना चाहिए ताकि शिक्षार्थियों को उचित शिक्षा के साथ उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो। नीतियों को क्रियान्वित करने के साथ ही उनके क्रियान्वयन का निरीक्षण होना चाहिए। परीक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। शिक्षकों की भर्ती गुणवत्ता के मानकों के आधार पर होनी चाहिए। शिक्षकों के शिक्षण कार्यों का मूल्यांकन समय–समय पर होना चाहिए। क्योंकि शिक्षक वह प्रकाशदीपक है जो शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास करके उसे योग्य, कुशल तथा आर्दश नागरिक बनाता है, जो हमारे समाज तथा राष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। जिससे हमारा समाज तथा राष्ट्र उन्नति के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो सके। शिक्षार्थियों के साथ–साथ शिक्षक भी स्वयं को निराशा के अंधकार में डूबा हुआ महसूस कर रहा है। क्योंकि शिक्षार्थी ही शिक्षक की जीवन ज्योति है, समाज एवं राष्ट्र का भविष्य है। इसलिए शैक्षिक प्रशासन, महाविद्यालय प्रबन्धक, शिक्षक तथा बुद्धिजीवी वर्ग को एक साथ मिलकर लम्बे समय से चल रही शिक्षा पद्धतियों की समीक्षा करके वर्तमान समय में उच्च शिक्षा में शिक्षार्थियों, शिक्षकों, समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में शिक्षार्थियों, शिक्षकों, समाज तथा राष्ट्र के उत्थान में सहायक उपयोगी उच्च शिक्षा व्यवस्था को अपनाने की नई पहल करनी होगी। क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। समयानुकूल परिवर्तित उच्च शिक्षा ही भविष्य मे सार्थक सिद्ध होगी।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा : समस्याएँ, चुनौतियां एवं सुधार

बिपिन शाह
शोधार्थी
विधि विभाग
डा. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय
मोहान रोड, लखनऊ

प्रस्तावना

देश के 29 राज्यों में उत्तर प्रदेश जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य है और राज्य की उच्च शिक्षा का 90 प्रतिशत भाग स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के अधीन है। प्रदेश में लगभग 6000 से अधिक स्ववित्तपोषित महाविद्यालय विभिन्न विश्वविद्यालयों से संबद्ध है। जिस प्रदेश की 90 प्रतिशत उच्च शिक्षा स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के अर्न्तगत हो और उस पर प्रश्न उठ रहे हो तो कहीं न कहीं उनके संचालन में या शिक्षा का अभाव ही है जिस पर गंभीरता से विचार किए जाने की आवश्यकता हैं। सरकार से स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों को आर्थिक सहयोग प्राप्त न होने के कारण सभी प्रकार की आवश्यकताओं व व्यय पर महाविद्यालय प्रबंधक का नियंत्रण होता है।

उद्देश्य

जैसा कि विदित है कि स्ववित्तपोषित महाविद्यालय की स्थापना निजी स्तर पर की जाती है, स्थापना का उद्देश्य उच्च शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना तथा अधिक से अधिक छात्र–छात्राओं को शिक्षा ग्रहण कर जिला, प्रदेश व देश का नाम रोशन करना होता है।

समस्यायें

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय की स्थापना से लेकर महाविद्यालय की जमीन व उस पर भवन का निर्माण कराने महाविद्यालय में शिक्षकों/कर्मचारियों की नियुक्ति तथा उनके वेतन व अन्य तमाम खर्चो की देनगी की जिम्मेदारी महाविद्यालय प्रबंधक की होती है जिसमें प्रबंध तंत्र प्रारम्भ के कुछ वर्षो तक कोई लाभ नही प्राप्त कर पाता है जिसके परिणामस्वरूप प्रबंधतंत्र विचलित होने लगता है और धीरे–धीरे अपने उद्देश्य से भटकने लगता है जिसके अर्न्तगत महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक व कर्मचारियों की संख्या में कटौती करना प्रारम्भ कर देता है और उनके वेतन आदि कम करना शुरू कर देता है तथा अन्य खर्चे जो दैनिक आवश्यकताओं के रहते है उनमें कमी करने लगता है जिसके परिणामस्वरूप महाविद्यालय का शैक्षिक वातावरण धीरे–धीरे विलुप्त होने लगता है और महाविद्यालय व्यवसायिक स्थित ग्रहण कर लेता है जिसका लक्ष्य अधिक से अधिक छात्र–छात्राओं को प्रवेश दिलाना रह जाता है और अन्य सभी कार्य कागजों में होते रहते है। महाविद्यालय में शिक्षकों का स्थायी न होना सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण प्रबंधतंत्र मनमानी करते है और शोषण करते है।

चुनौतियां

ऐसा नही है कि जिला प्रशासन, विश्वविद्यालय, तथा सरकार स्ववित्तपोषित महाविद्यालय की स्थिति से वाकिफ नही है परन्तु सरकार के सामने भी चुनौती रहती है, क्योंकि यह महाविद्यालय पूंजीपतियों के है और तो और इनमें से अधिकतर महाविद्यालय राजनेताओं के है जो सरकार या विपक्ष में अहम पदों पर है।

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय के विद्यार्थियों की स्थिति अत्यंत ही चिन्तनीय होने का मुख्य कारण महाविद्यालयों में शिक्षकों का अभाव होना और शिक्षण कार्य का अभाव होना है। जिस पर शिक्षाविद् तथा सरकार को गंभीरता से मंथन करने की आवश्यकता है अन्यथा प्रदेश में दिन पर दिन बेरोजगारी का स्तर बढ़ता ही जायेगा जो एक भयंकर चुनौती होगी।

निष्कर्ष

स्ववित्तपोषित महाविद्यालय उच्च शिक्षा की दृष्टि से एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसका स्तर प्रबंधक/सरकार की उपेक्षा के कारण गिर रहा है। जहां तक मेरा अनुभव कहता है कि यदि सरकार द्वारा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों को अधिग्रहीत करना संभव नही है तो स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों को एक निश्चित मानदेय सरकार स्वयं अथवा विश्वविद्यालय अपने स्तर से भुगतान करे और छात्र–छात्राओं की फीस बैंक के माध्यम से जमा कराई जाए, जिस पर सरकार/विश्वविद्यालय का नियंत्रण हो और प्रबंधतंत्र को एक निश्चित राशि उपलब्ध करायी जाए जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बनी रहे और स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में मानक के अनुरूप शिक्षण कार्य हो सके।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

भारत में उच्च शिक्षा की चुनौतियॉ

स्वर्णिमा सिंह
विभागाध्यक्ष
भुगोल विभाग
बाबू जय शंकर गया प्रसाद
पी0जी0 कालेज, सुमेरपुर
उन्नाव

सारांश

बदलती व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में हमारी नैतिकतापूर्ण गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व– निर्माण केन्द्रित शिक्षा–पद्धति कहाँ तक अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण बनायें रखने में समर्थ है–विचारणीय प्रश्न है। निःसंदेह हम मैकाले की शिक्षा पद्धति को पानी पी–पीकर कोसने से बाज नहीं आते, पर आज तक मैकाले की भूतात्मा हमारा पीछा नहीं छोड़ रही है जिसके लिए मैकाले कहीं से भी जिम्मेदार नज़र नहीं आते। भूमण्डलीकरण के इस दौर में हम अपनी ही पहचान खोते जा रहे है। पूरे विश्व में जो शैक्षणिक व्यवस्था है उसके तीन घटक है–छात्र, अध्यापक और अभिभावक। इन तीनों के समन्वय के बगैर शैक्षणिक त्रिभुज के निर्माण की परिकल्पना ही बेमानी है।

प्रस्तावना

विद्यालयी पढ़ाई करने वाले नौ छात्रों में से एक ही कालेज पहुॅच पाता है। उच्च शिक्षा हेतु पंजीकरण कराने वालों का अनुपात हमारे यहाँ दुनिया में सबसे कम 11 प्रतिशत है जबकि अमेरिका में यह 83 प्रतिशत है इस अनुपात को 15 प्रतिशत तक ले जाने के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु भारत को 2,26,410 करोड़ रूपये का निवेश करना होगा, जबकि 11वीं योजना में इसके लिए केवल 77,933 करोड़ रूपये का ही प्रावधान किया गया।

अभी कुछ दिन पहले राज्य सभा में पूछे गए एक सवाल के जवाब में सरकार के पास वही पुराना जवाब था कि देश भर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय अध्यापकों की कमी से जूझ रहे है। आप केवल अंदाजा लगाऍ देश के 39 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के चालीस फीसदी पद खाली है। तो वहॉ शैक्षणिक गतिविधियों और उनकी गुणवत्ता की क्या स्थिति होगी। यह केवल केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की स्थिति है अगर इसमें राज्य स्तरीय विश्वविद्यालयों को भी जोड़ दिया जाए तो तस्वीर बहुत भयावह होगी। [2]

इस परिदृश्य के प्रति चिन्ता व रोष तो है लेकिन शिक्षा व ज्ञान की दिशा को जनो– मुरती करने के लिए जिस सशक्त जन आन्दोलन की आवश्यकता है, वह समाज में दिखाई नहीं दे रहा है लोगों की नज़र में शायद अथी पाप का घड़ा पूर्णतः नहीं भरा है।

संदभ ग्रंथ सूची

1. *शर्मा, सुभाष (2007) शिक्षा और समाज परकाशन संस्थान : नई दिल्ली।*
2. *दुबे, श्याम चरण (1994) शिक्षा समाज और भविष्य राधाकृष्ण : दिल्ली।*
3. *कुमार कृष्ण (1998) शिक्षा ज्ञान और वर्चस्व गरथं, शिल्पी : नई दिल्ली।*
4. *गांधी महात्मा (2008) मेरे सपनों का भारत राजपाल एण्ड संस : नई दिल्ली।*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्चशिक्षा की दशा और दिशा

अर्पूवा अवस्थी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
नवयुग कन्या महाविद्यालय
लखनऊ

शिक्षा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है शिक्षा के साथ ही जब हम उच्चशिक्षा की ओर बढ़ते है तो समाज को उच्च शिक्षित लोगों से कई उम्मीदें होती है। कुछ उच्चशिक्षा संस्थान अपनी अलग पहचान रखते है।

शिक्षा के उद्देश्य पुस्तक में प्रो0 हाईडेड ने विश्वविद्यालयों का राष्ट्र निर्माण में योगदान के सन्दर्भ में लिखा है– "विश्वविद्यालयों में हमारी सभ्यता के बौद्धिक मार्गदर्शन को प्रशिक्षित किया है। यही से विधिज्ञ, राजनीति विद, चिकित्सक, वैज्ञानिक, प्राध्यापक एवं साहित्य सेवी निकले है(1)।

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता से तात्पर्य उच्च शिक्षा का मानको पर खरा उतरना है। यदि शिक्षा हमारे जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर दे तभी वह सार्थक है। चुनौतियों को हल करना, बुद्धि का विकास होना जीवन में आयी हुयी सभी प्रकार की समस्याओं का सामना करना ही उच्च शिक्षा की उपयोगिता है।

आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी लोग बेरोजगार है और उनमें एक नई समस्या फ्रस्टेशन की समस्या सामने आ रही है। बी0टेक0 और पी0एच0डी0 करने के बाद भी चपरासी और चर्तुथ श्रेणी की नौकरियों में आवेदन कर रहे है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर गिरावट हो रही है। 70 प्रतिशत उच्च शिक्षा प्राप्त लोग अकुशल है भारत की उच्चतर शिक्षा व्यवस्था अमरीका और चीन के बाद 3 नम्बर पर आती है लेकिन दुनिया के शीर्ष 200 विश्वविद्यालयों में भारत का एक भी नाम नही है (2)।

स्कूल की पढ़ाई करने वाले 9 छात्रों में से एक ही कॉलेज पहुँच पाता है एक शोध के अनुसार 10 में से 1 इंजीनियरिंग की डिग्री ले चुके 4 भारतीय छात्रों में एक ही नौकरी पाने योग्य है।भारत के 90 फीसदी कॉलेज और 70 फीसदी विश्वविद्यालयों का स्तर बहुत कमजोर है। शिक्षकों की कमी भी एक बहुत बड़ा कारण है। जिसमें तथाकथित हमारी सरकारों का बहुत बड़ा हाथ है जिन्होनें हमारी शिक्षा व्यवस्था का व्यवसायीकरण कर दिया है।

उच्च शिक्षा में तीन प्रमुख कार्य होते हैं–

शिक्षण शोध तथा अकादमिक प्रशासन। इन तीनों पर किसी का भी समान अधिकार होना आसान कार्य नही है। यदि किसी की शिक्षण में रूचि होगी तो कोई शोध में कोई अकादमिक अच्छी तरह निभायेगा परन्तु प्रोमोशन के समय उसे तीनों की आवश्यकता होती है (3)।

मेरे विचार में उच्च शिक्षा संस्थानों में उन्ही छात्र छात्राओं का दाखिला करना चाहिए जो मूल रूप से विषयों में मजबूत हो, जिनकी बौद्धिक क्षमता अच्छी हो और विषय पर पकड़ हो। आरक्षण एवं अन्य कारणों से उच्च शिक्षा में लगातार गिरावट आ रही है क्योकि अयोग्य व्यक्ति जब डिग्री लेकर शिक्षण कार्य करता है तो स्तर और गिरता है और परिणाम हमारे सामने है। अतः ऐसी व्यवस्था लागू हो कि बी0ए0 बी0एस0सी0 बी0कॉम0 के एडमीशन के पहले से ही छात्र छात्राओं की बौद्धिक क्षमता को परख लिया जाए।

यदि छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण कर सकता है तब उसे आगे बढ़ने का अवसर दिया जाए अन्यथा उसकी रूचि के अनुसार उसे जीवीकोपार्जन का कार्य दे दिया जाए इस व्यवस्था से शिक्षा की दशा भी सुधरेगी और नई दिशा भी मिलेगी।

हमारी शिक्षा प्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है पाठ्यक्रम को व्यवाहारिक बनाया जाए एवं नई टेक्नोलोजी और नई शिक्षण पद्धति को अपना कर विषय को रूचिकर बनाया जाए।

नए शोध नए संकलन एवं नए विचार सामने लाने के लिये प्रोत्साहन अत्यन्त आवश्यक है तभी उच्च शिक्षा में सुधार हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *उच्चशिक्षा में गुणवत्ता एवं स्वायत्तता – सुशील कुमार तिवारी*
2. *B.B.C. हिन्दी न्युज – भारतीय उच्चशिक्षा सैकड़ो सवाल*
3. *उच्चशिक्षा की चुनौतिया – प्रो0 एस0 के0 सिंह*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा और उसकी समस्याएं

अर्चना चतुर्वेदी
राजनीतिशास्त्र विभाग
त्रिवेदी गर्ल्स डिग्री कालेज
हमीरपुर

किसी राष्ट्र या गौरव उसकी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में निहित होता है। यदि हम भारत की उच्च शिक्षा में अतीत में झांक कर देखे तो हम पाते हैं कि वैदिक युग में उच्च शिक्षा अपने चरम उत्कर्ष पर थी। उस समय भारतीय दर्शन, धर्म, ज्ञान और विज्ञान के शाश्वत ग्रान्थ वेदों की रचना हुई। इसकी महानता में बौद्ध युग में और अधिक वृद्धि हुई, जब नालन्दा, तक्षशिला, वल्लभी और विक्रमशिला जैसे अनेके जग प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों ने भारत को विश्व गुरू होने की ख्याति प्रदान की।

एक समय था और आज का समय है। अशोक महान के युग के बाद हमारा ऐसा पतन हुआ कि ढ़ाई हजार वर्शो के बाद भी हम सिर नहीं उठा पा रहे हैं।

वर्तमान में उच्च शिक्षा से सम्बन्धित अनेको अनेक समस्याए हैं, परन्तु उसमें मुख्य समस्या शिक्षक के स्तर की है। अक्सर कहा जाता है कि विश्वविद्यालय शिक्षा के मानको पर खरे नहीं उतर रहे हैं, लेकिन विचारणीय प्रष्न यह है कि जब इतनी बड़ी तादाद में उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के पद रिक्त हो तो दूसरे मानको पर वे कैसे खरे उतर सकते है। आजादी के बाद देश में उच्च शिक्षा की स्थिति में सुधार की जो उम्मीदें की गई थी, वह सब षायद हारी रह गई है।

जब उच्च शिक्षा में दाखिला लेने वाले विद्यार्थिर्यो की संख्या तेजी से बढ़ रही है और उन्हें शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों की संख्या में निरन्तर कमी आती जा रही हो तो ऐसे में विश्व गुरू बनने में दावे में कैसे देखा जायेगा। उच्च शिक्षा पर कराये गये एक सर्वे 2017–18 की रिपोर्ट बताती है कि पिछले तीन वर्शो में देश की उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षकों और कुछ संस्था में दो लाख से ज्यादा की कमी आयी है।

देश के विश्वविद्यालयों में शिक्षको के खाली पद भरने का काम भले ही मंथर गति से हो रहा हो, लेकिन उच्च शिक्षा में दाखिल लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। देश के दूर दराज के इलाकों में विश्वविद्यालय और कालेज ही शिक्षकों की कमी की समस्या से नहीं जूझ रहे हैं, बल्कि राज्यों की राजधानियों और देश में प्रतिश्ठित महाविद्यालयों में भी शिक्षको की काफी कमी है। देश में 40 केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं, इनमें प्राध्यापको के दो हजार चार सौ छिहत्तर पद स्वीकृत है, जिनमें से तेरह सौ पद खाली हैं, यानी करीब चौवन फीसदी प्राध्यापकों की कमी है।

आजादी के बाद देश में उच्च शिक्षा की स्थिति में सुधार की जो उम्मीद की गई वह शायद हारी रह गई। आज देश का युवा उच्च शिक्षा के लिये आतुर है। विविधतापूर्ण विषयो के साथ उच्च शिक्षा के विकल्प भी तेजी से बढ़ रहे है, लेकिन सुविधायें नदारत और शिक्षक गायब हैं। इसी का नतीजा है कि उच्च शिक्षा से छात्रों का पलायन हो रहा है।

भारतीय विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों को विश्व स्तरीय बनाने के लिये केन्द्र सरकार बड़े स्तर पर काम कर रही है। इसके लिये एक अलग कोश बनाया गया और दुनिया में कई देशों के साथ शैक्षणिक सुधार को लेकर अनुबन्ध किया गया है, लेकिन घरातल पर ये सुधार कहीं नजर नहीं आ रहा है।

शिक्षकों की कमी देश में शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनी हुयी है। किसी भी शिक्षा संस्थान का षैक्षिक स्तर वहां के प्राध्यापको (शिक्षको) के स्तर पर निर्भर करता है, कमी योग्य उम्मीदवार की नहीं, उन्हें नियुक्त करने की इच्छा षक्ति की है। केन्द्र और राज्य सरकारें अगर मिलकर ठोस कार्य योजना के तहत मिलकर उच्च शिक्षा से सम्बन्धित इस गम्भीर समस्या पर कार्य करे तो निष्चित ही इस समस्या से निजात पाया जा सकता है। देश में सभी उपलब्ध योग्य आवेदकों का पंजीयन करें तो यह बात खुद ही स्पष्ट हो जायेगी कि देश में काबिल युवाओं की कोई कमी नहीं है। उपरोक्त प्रयासों के साथ इस समस्या के लिये एक सुधारात्मक दृष्टिकोण की जरूरत है, जिससे एक नवीन युग की शुरूआत की जा सकती है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा : समस्यायें, चुनौतियाँ एवं सुधार

सोनू गुप्ता
शोधछात्रा
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झांसी, उ0प्र0

प्राचीन काल मे अपने शैक्षिक स्तर, ज्ञान एवं विज्ञान मे प्रगति के दम पर भारत विश्व गुरू कहलाता था क्योंकि भारत मे विश्व प्रसिद्ध नालन्दा, विक्रमशिला आदि विश्वविद्यालय थे जहां विभिन्न देशों के नागरिक शिक्षा प्राप्ति के लिये आते थे।

प्राचीन काल मे भारत मे गिनी चुनी संस्थायें थी परन्तु वर्तमान परिपेक्ष्य मे शिक्षण संस्थाओं मे आशातीत संख्यात्मक वृद्धि हुई है, परन्तु खेद का विषय है कि शिक्षा का गुणात्मक स्तर गिरता जा रहा है।

भारत सरकार नें समय–समय पर विभिन्न समितियों और आयोगों की स्थापना इस उद्देश्य से थी कि उच्च शिक्षा जन–जन तक पहुॅच सके। इस कारण भारत सरकार द्वारा उच्च शिक्षा का निजीकरण किया गया और स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों की स्थापना के रास्ते खोल दिये गये। आज देश व प्रदेश के 90 प्रतिशत युवाओं को इन्ही महाविद्यालयों द्वारा शिक्षा दी जा रही है। उसके विपरीत इन शिक्षण संस्थाओ का निरन्तर पतन होता जा रहा है, इसका प्रमुख कारण सरकार द्वारा इन महाविद्यालयों की निरंकुशता रोकने, शैक्षिक गुणवत्ता के लिये पठन–पाठन, संसाधन, शिक्षण व कर्मचारियों के लिये कोई स्पष्ट नियम नहीं है।

शिक्षा के गिरते स्तर पर समय–समय में विभिन्न आयोग बने, जैसे– राधा कृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, शिक्षा की विभिन्न नीतियों आदि ने शिक्षा के गिरते स्तर पर ध्यान आकर्षित किया, शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि के लिये मूल्यांकन, नवाचार, पर्यवेक्षण हेतु विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आदि है, उसके बावजूद शैक्षिक स्तर पर पर्याप्त विकास नही हो पा रहा है।

शिक्षा के निजीकरण से होने वालों लाभों की तुलना मे हानियां अधिक है–

जैसे– अत्यधिक शुल्क वसूली, अमीरों और गरीबों के बीच असमानता की भावना उत्पन्न करना, कम से कम वेतन मे शिक्षणों को अध्यापन हेतु रखना, दिन प्रतिदिन शिक्षा के स्तर मे गिरावट आदि है।

निष्कर्ष

अन्त में यह कहा जा सकता है कि शिक्षा एक ऐसा विषय है, जिस पर निवेश करना दीघकालिक लाभ होता है, सरकार शिक्षा को निजी हाथों मे सौंपकर सुकून से नही बैठ सकती है, भावी पाढ़ी को जीवन मे अनेक ऐसी जटिल समस्याओं से जूझने के लिये छोड़ देती है। जिसकी कल्पना न तो विद्यार्थी करता है और न ही अभिभावक! यह सत्य है कि शिक्षा प्राप्त करना सबका अधिकार है, परन्तु ऐसी शिक्षा जो बेरोजगारी बढ़ाये, परीक्षा के दौरान भी जहां अभ्यार्थी अपना विषय और कक्षा भी सही ढंग से न लिख पाये, अपने वरिष्ठों का सम्मान न कर पायें, अपने प्रति, परिवार के प्रति, समाज के प्रति, देश व विश्व के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन न कर पायें तो ऐसी शिक्षा पर प्रश्न चिन्ह लगाना लाज़मी है, शिक्षा के निजीकरण से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान ढूंढना बहुत आवश्यक है। इसके लिये मानक विहीन संस्थाओं की मान्यता समाप्त की जानी चाहिए! अध्यापको का वेतन विश्वविद्यालयों द्वारा निजी प्रबंध तंत्र से अपने पास लेकर स्वयं करना चाहिए। बेलगाम निजी प्रबंध तंत्र पर जबरजस्त नकेल कसने की आवश्यकता है और यह सम्भव हो सकता है, सिर्फ आवश्यकता है दृढ़ इच्छाशक्ति की! इस दिशा मे परिवर्तन लाने के लिये सभी को संकल्प लेना होगा। जिससे हम एक बेहतर भारत के सुन्दर भविष्य का निर्माण कर सकें।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

उच्च शिक्षा : समस्यायें, चुनौतियाँ एवं सुधार– व्यवसायिकता के स्तर पर

नीतू गुप्ता
प्रवक्ता
हिन्दी विभाग
पी0पी0एन कालेज
कानपुर

सारांश

''शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है, जिसका उपयोग आप दुनिया बदलने के लिए कर सकते है।''[1]

नेल्सन मंडेला

भारतीय मस्तिष्क आज भी दुनिया में एक सबसे शक्तिशाली मस्तिष्क के रूप में स्वीकार्य है, बावजूद इसके हम आज भी विकासशील ही है विकसित नहीं और यह विकास की दर भी अत्यन्त धीमी है, कारण– शिक्षा के क्षेत्र में उचित मार्गदर्शन का अभाव। उच्चशिक्षा का स्तर वह अन्तित सीढ़ी है, जहाँ खड़े होकर व्यक्ति औद्योगिकीकरण के लिए अपने कदम बढ़ाता है, परन्तु जब वह सीढ़ी ही पर्याप्त संसाधनों के अभाव में लड़खड़ा रही होगी तो उसमें खड़ा व्यक्ति कैसे स्थिर रह सकता है। समस्या कोई एक नही है, बल्कि अनेको हैं अशिक्षा का विकराल रूप, उससे जो उबर पाया तो प्राइमरी व माध्यमिक स्तर की शिक्षा में ढीलापन, धन की कमी, स्वतन्त्र निर्णय लेने की क्षमता का अभाव, योग्य शिक्षकों की कमी और सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या– ब्रेन ड्रेन यानि– दिमाग निकास इसका अर्थ यह होता है कि व्यक्ति भारत में रह कर भारतीय संसाधनों का प्रयोग करके, उच्चशिक्षित एवम् कौशलों में निपुण तो हो जाता है, परन्तु देश के विकास में अपनी योग्यता लगाने के बजाय वह विदेशों में अपनी तरक्की की राह पकड़ता है। इसका कारण यह है कि भारतीय मस्तिष्क को व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थिति लोगों द्वारा व्यवस्थित जगह पर प्रयोग नहीं किया जाता हैं, इसके पीछे कुछ राजनैतिक कारण भी हो सकते है, फिलहाल वजह कोई भी हो भारत को स्वयं को विकसित करने के समस्त उपाय उसके हाथ से निकलते जा रहे है, इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि विशेषज्ञों को विदेश में जाना ही नही चाहिये। सरकार विशेषज्ञों को दूसरे देशों की कार्य प्रणाली व खोजों को समझने व उनसे सीखने के लिए अवश्य भेजें व उनका व्यय भी वहन करे, परन्तु इस विशिष्ट ज्ञानार्जन, निरीक्षण एवम् प्रशिक्षण में भारतीयता का समावेश अवश्य हो, इसलिए पाठ्यक्रम में भी भारतीय व्यवसायिक ज्ञान, शास्त्रीय ज्ञान और कलाओं का समावेश आवश्यक है।

बेशक सबसे उपयुक्त शिक्षकों का चयन करना पर्याप्त नही है। हमारे शिक्षकों को अपने शिष्य को बेहतर बनाने के लिए समय और संसाधन दोनों की आवश्यकता है। अनुसंधान करने के लिए उन्हें धन चाहिये, इसके लिए उन्हें एक सभ्य वेतन भी प्राप्त होना चाहिये ताकि कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण के लिए वे अपना शत–प्रतिशत दे सके।

उस व्यक्ति का जीवन अधिक सुखपूर्वक व्यतीत होता है, जिसके पास जीवनयापन के साधन व सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में होती है। साधन व सुविधाओं के लिए अर्थोपार्जन आवश्यक है, जिसके लिए कोई न

कोई व्यवसाय चुनना होता है वे व्यक्ति जो स्वयं किसी व्यवसाय की क्षमता नहीं रखते वे दूसरों पर आश्रित रहते है।

हमारी शिक्षा व्यवस्था में सबसे बड़ा दोष यह कि शिक्षार्थी शिक्षोपरान्त इस योग्य नही हो पाता कि कोई व्यवसाय करके आत्मनिर्भर बन सके। इन्हीं विचारों की व्याख्यार करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा–

''तुम्हारी शिक्षा का उद्देश्य क्या है? या तो मुंशीगिरी मिलना, वकील हो जाना या अधिक से अधिक डिप्टी मजिस्ट्रेट बन जाना, जो मुंशीगिरी का ही दूसरा रूप है– बस यही न? इससे तुमको या तुम्हारे देश को क्या लाभ होगा.....?''[2]

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर तक छात्र अपने भावी जीवन की दिशा चुन लेते है, अतः विश्वविद्यालय स्तर पर इसे विशिष्टता और कौशल से पूर्ण कर देना चाहिये ताकि छात्र दिशाहीन होने से बच सके। किसी का नौकर बनने के स्थान पर स्वयं अपना व्यवसाय अपने कौशल से प्रारम्भ करके देश की रीढ़ को मजबूती प्रदान कर सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *https://awakenthegreatnesswithin.com*
2. *स्वामी विवेकानन्द– शिक्षा (हिन्दी अनुवाद) श्री रामकृष्ण आश्रम नागपुर पृष्ठ 28–29*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

The Authenticity of Literary Criticism at The Present Time

Mohd. Saif
Designation
Deptt. of _____
College Name
City,

Literary criticism is a very old concept which began almost side by side with literary creation. The critics hold a very important place in literature because it is they who judge the quality of a literary work. The purpose of criticism is also the same. A critic must judge a literary work and praise its good qualities and condemn its shortcomings so that the writers may improve themselves and the people may get an even better piece of literary work. However there are some critics and there have been some critics whose prejudice made them despise the work of the writers. Sometimes they even cross their limits and interfere with the personal life of the literary artist. For instance, Dr. Samuel Johnson in his famous critical work 'Life of Milton' writes about Milton "That his own daughters might not break the ranks, he suffered them to be depressed by a mean and penurious education. He thought woman made only for obedience, and man only for rebellion." (Life of Milton 170) Now I personally do not understand what Milton's treatment of his daughters has to do with his literary work and how Johnson was able to read the mind of a person who had died about a hundred and five years ago before him. It is clearly Johnson's personal dislike of Milton which has revealed itself in his work. This is nothing extraordinary. This is just human nature. Humans usually praise those whom they like and condemn those whom they dislike. So this makes the critical work all the more controversial because you can never be sure whether the criticism done by someone is his actual analysis or just a bundle of his prejudices. When Dr. Samuel Johnson who is considered as one of the greatest literary critic of all times can get biased in his judgement then nothing can be said for the other critics around. Telling from personal experience, a friend of mine is an emerging poet and whenever he writes a new poem, he gives it to me for proofreading. When we are alone, then I do tell him the errors which I sight. However in front of others I have never uttered a single word against his poems. The reason is that I do not want to embarrass him in front of everyone and thus stain our friendship. Here I would like to mention the name of Samuel Taylor Coleridge who inspite of being a good friend of William Wordsworth pointed out various shortcomings of 'A Preface to the Lyrical Ballads' in his own critical work 'Biographia Literaria'. I think this is a fine example of how to get past your personal self for the sake of true and honest criticism. A good critic is one who criticises the work of a writer and not the writer himself. A critic must free himself from all kinds of personal, religious, political and social prejudices. By doing so, he will be justifying the right meaning and purpose of criticism.

References

1. G. B. Hill's edition of Lives of the English Poets, 3 vols. (Oxford: Clarendon Press, 1905)

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-11* December- 2018
Innovation The Research Concept

Higher Education: Problems, Challenges and Solutions at Qualitative Level

Paramjit Kaur
Principal
Dr. Virendra Swarup Senior Secondary School
Kanpur, U.P.

Abstract

Education is one of the significant factors instrumental in the development of a country. For any society to be successful it has to have a strong education system leading to a strong nation. When we are experiencing a major paradigm shift in technology and educational needs, it is important to move with the change in keeping with the social, economic, cultural, moral and spiritual issues facing humanity. India today needs more morally and holistically educated people to drive the future generations of the nation forward. Today the country is facing n number of problems, right from terrorism, exploitation, corruption, communalism etc. The society is lead by individuals who for their personal benefits spoil the social infrastructure. The problematic Education system is not just the result of modernization or the changing scenario of the Indian society, it is also the result of decline in status of teaching content, teaching patterns and materialism in the teaching community as a whole. Now a days it is more of earning marks than learning lessons. They score marks but as far as the depth of learning is concerned, it is missing. Globalization and privatization have imposed new challenges but the nations are still engrossed in solving the basic problems of accessibility to higher education for all. In the process of the transition from engage to mass education, universities worldwide are under pressure to enhance access and equity, on the one hand, and to maintain eminence of quality, worth and brilliance, on the other. It is seen that the involvement of private sector in higher education has seen great number of changes in the field. Over 60% of higher education institutions in India are stimulated by the private sector. This has accelerated the establishment of institutes which have originated over the last decade making India home to the largest number of Higher Education institutions in the world, with student enrolments at the second highest (Shaguri, 2013). Despite these numbers, international education rating agencies have not placed many of these institutions within the best of the world ranking. Also, India has failed to produce world class universities So the issue of better quality in higher education has been of great concern for all educationally involved individuals. The educational system basically has to cater to the new trends and diversities leading to fulfillment of the varied aspirations of an individual. We need to certain the quality of education for our graduates on different parameters so as to ensure a proper framework to the career prospects for them. I think there is a lot of

scope for improvement to focus on all round qualitative aspects to prepare graduates as per the needs of the current competitive environment.

Let's see a few measures that can help the quality of higher education where it becomes conspicuous.

1. The need is to differentiate among students if they are inclined to gain a useful employment or they look forward to strengthen the academic and exploration skills.
2. Importance must be given to proper assessment tools rather than just grading for the purpose of commercial motives. Quantity must not overrun quality.
3. Through various audio video and other aids the teacher should induce the student to think, innovate and challenge existing ideas and generate new knowledge.
4. The corporate sector aspirations must be taken care of in terms of occupational diversity. Therefore, the higher education institutions have to develop such mechanism to fit into occupational diversity.
5. There should be a multidisciplinary approach in higher education so that students knowledge may not be restricted only upto his own subjects.
6. The teachers must keep themselves updated so as to match the fast technological availability of data to the students.
7. The quality of teachers in general and higher education in particular has posed serious challenges. In keeping with the commercial competition in the market many institutions hire teachers at low cost overlooking the very quality of teacher.
8. This calls for strengthening the concept of continuous improvements bringing innovations and desired quality in academic contents and delivery.
9. Each institution must set benchmarks based on specific quality parameters and work on it consciously.
10. New and changing trends in higher education across the Globe have to receive priority and a careful evaluation to incorporate in the required quality parameters. The kind of passion in learning and understanding lack in majority of students and the need of the hour is to make learning more passionate and a never ending process which leads a nation to the pinnacles of growth. Finally I believe that lets be more conscious as teachers and not just keep filling vessels with some words which lead to manufacturing machines for a materialistic India!

References

1. *Prof. Kanhaiya Singh https://www.thehighereducationreview.com/ magazine/quality-issues-in-higher-education-ZMRB103195480.html*
2. *P. Arunachalam1.Higher Education Sector in India: Issues and Imperatives*
3. *Younis Ahmad Sheikh (2017) Higher Education in India: Challenges and Opportunities. Journal of Education and Practice www.iiste.org . ISSN 2222-1735 (Paper) ISSN 2222-288X Vol.8, No.1*
4. Mukesh Chahal (2015). Higher Education in India: Emerging Issues, Challenges and Suggestions ISSN: 2349-5677 Volume 1, Issue 11.